अभिनव

कदम

अभिनव कदम (6-7) • राही मासूम रज़ा, केन्द्रित

अभिनव कदम

राही मासूम रज़ा विशेषांक

(पचहत्तरवीं वर्ष गांठ पर)

अपने अध्ययन कक्ष में राही मासूम रज़ा

यह अंक गुजरात के उन तमाम बेगुनाहों को जिन्हें प्रायोजित फासीवादी जबड़ों ने लील लिया।
यह अंक उन तमाम उदास आँखों को जिनके सपने राख की ढेर में तब्दील कर दिये गये।

संस्थापक संरक्षक : अब्दुल बिस्मिल्लाह, उत्तम चन्द — जनसंस्कृति के पक्ष में आयोजन

वर्ष : ५ अंक : ६-७ (संयुक्तांक) — नवम्बर २००१ - अक्टूबर २००२

अभिनव कदम

: संपादक :

चन्द्रदेव राय, जयप्रकाश धूमकेतु

: अतिथि संपादक

कुँवर पाल सिंह

: संपादन सहयोग :

शिवकुमार पराग, राघवेन्द्र प्रताप सिंह

: प्रसार व्यवस्था :

जितेन्द्र मिश्र

: संपर्क :

जय प्रकाश धूमकेतु

२२३, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निजामुद्दीनपुरा

मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.) २५७१०१

फोन (०५४७) २२३११३

आवरण : रामबाबू

: सहयोग राशि :

यह अंक	६०/-
संस्थाओं के लिए	१००/-
आजीवन सदस्यता	१०००/-

प्रकाशक	साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था 'मंथन' मऊनाथ भंजन (मऊ)
कम्पोजिंग	ऋतिक कम्प्यूटर प्रिन्टर्स, मऊ दूरभाष : २२२४८८
प्रिंटिंग	सरफाज ऑफसेट प्रेस, सईदी रोड, मऊ : दूरभाष- २२१७०८

संपादन/संचालन/अवैतनिक, अव्यवसायिक। अभिनव कदम से सम्बन्धित सभी विवाद मऊ न्यायालय के अधीन होंगे। अभिनव कदम में प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में राही अन्तिम सार्वजनिक व्याख्यान देते हुये (२५ नवम्बर १९९१)

व्याख्यानमाला के संयोजक प्रो. कुँवरपाल सिंह राही मासूम रज़ा का परिचय कराते हुये,
साथ में बैठे हैं प्रसिद्ध कथाकार हाज़ी अब्दुल सत्तार

रचना क्रम

क्र.सं.	पाठ का नाम	लेखक	पृष्ठ
परिचय, व्यक्तित्व, संस्मरण			
१-	राही मासूम रज़ा : एक परिचय		६
२-	राही मासूम रज़ा पर यह अंक क्यों?	जय प्रकाश धूमकेतु	१४
३-	सम्पादक की ओर से	कुँवर पाल सिंह	१७
४-	'राही' मासूम रज़ा की पचहत्तरवीं साल गिरह पर	शिवकुमार मिश्र	२०
५-	राही मासूम रज़ा : सफर ही जिसकी मंजिल है	कमलेश्वर	३५
६-	राही और अलीगढ़ : वे भी क्या दिन थे	असगर वज़ाहत	४२
७-	गाज़ीपुर का बेटा : राही	कुँवर पाल सिंह	५१
८-	'मैं समय हूँ' बनाम गंगौली का 'राही'	शुकदेव सिंह	६०
९-	राही मासूम रज़ा की याद में	शैलेश जैदी	६९
१०-	ऐसा तो कोई दीवाना नहीं तेरे बाद	सुरेश कुमार	७१
११-	एक राही चला गया	उबैदुर्रहमान गाज़ीपुरी	७६
साक्षात्कार			
१२-	राही मासूम रज़ा : व्यक्तित्व-राही कैसे लिखते थे? नमिता सिंह >< नय्यर जहाँ		८३
१३-	अज़ब आज़ाद मर्द था राही मासूम रज़ा सैयद शाहिद मेहदी >< असगर वज़ाहत		८७
१४-	राही मासूम रज़ा के 'पूरे दोस्त' कुँवर पाल सिंह से देवेन्द्र कुमार की बातचीत		९२
१५-	मुस्लिम समाज का गठन हिन्दू समाज की तर्ज पर हुआ (डॉ.अब्दुल विस्मिल्लाह से चन्द्रदेव यादव की बातचीत)		९९
राही बकलम खुद			
१६-	धर्म और साम्प्रदायिकता	राही मासूम रज़ा	११५
१७-	ये झगड़े वोट बैंकों के दरवाजे हैं.....	राही मासूम रज़ा	११९
१८-	एक फ्रेम, दो तस्वीरें	राही मासूम रज़ा	१२३
१९-	लौटे हुए मुसाफिर	राही मासूम रज़ा	१२६
२०-	एक जंग हुई थी कर्बला में	राही मासूम रज़ा	१३१

क्र.सं.	पाठ का नाम	लेखक	पृष्ठ
२१-	आजाद हिन्दुस्तान की गुलाम फिल्म	राही मासूम रज़ा	१३४
२२-	कहानी लेखक से प्रोड्यूसर तक	राही मासूम रज़ा	१३७
२३-	खजुराहो से खोसला रिपोर्ट तक	राही मासूम रज़ा	१४१
२४-	बदन का व्यापार	राही मासूम रज़ा	१४४
२५-	महाभारत कथांश-१ संवाद-पटकथा	राही मासूम रज़ा	१४७
२६-	बावन साल पुरानी आँखें (अधूरा उपन्यास)	राही मासूम रज़ा	१६०
२७-	सिनेमा साहित्य और पाठ्यक्रम	राही मासूम रज़ा	१७६

लम्बी नज़्में

२८-	चाँद तो अब भी निकलता होगा	राही मासूम रज़ा	१८८
२९-	प्यास और पानी	राही मासूम रज़ा	१९५
३०-	वसीयत	राही मासूम रज़ा	१९९
३१-	'मैं फेरीवाला बेचूँ यादें' से दस कवितायें		२०७
३२-	राही मासूम रज़ा की बीस गज़लें		२१३

मूल्यांकन

३३-	राही के पुरखे : गालिब और तुलसी	कमलेश्वर	२२३
३४-	नास्टेल्जिया 'आधा गाँव' का	सैयद शाहिद मेहदी	२२८
३५-	आधा गाँव : भावी भारत की धुंधली तस्वीर	कुँवर पाल सिंह	२३१
३६-	एक नया गवाक्ष खोलती राही की भाषा	अब्दुल विस्मिल्लाह	२३९
३७-	मैं एक फेरीवाला बेचूँ यादें	कृष्ण मुरारी मिश्र	२४५
३८-	आधा गाँव : सामाजिक संस्कृति की वास्तविक शक्ति	प्रदीप सक्सेना	२५६
३९-	आधा गाँव और जोधपुर	सूरज पालीवाल	२७८
४०-	फिल्म, टेलीविजन और राही मासूम रज़ा	गुरवीर सिंह ग्रेवाल	२८५
४१-	सिनेमा और संस्कृति : नये रास्ते की तलाश	नमिता सिंह	२८९
४२-	समय की सलीब पर दस्तक देती ओस की एक बूँद	जयप्रकाश धूमकेतु	३०१
४३-	एक हिन्दुस्तानी की कहानी, जुबानी एक हिन्दुस्तानी	श्री प्रकाश शुक्ल	३०९
४४-	विभाजन, इस्लामी राष्ट्रवाद और भारतीय मुसलमान	वीरेन्द्र यादव	३१२
४५-	साम्प्रदायिक राष्ट्रवाद और उपन्यास (सन्दर्भ आधा गाँव और सती मैया का चौरा)	सुधीर चन्द्र	३४०
४६-	सेक्यूलिरिज्म को जीवन शैली बनाइये	हरियश राय	३५३
४७-	बचपन आधा गाँव में	शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी	३६०

क्र.सं.	पाठ का नाम	लेखक	पृष्ठ
४८-	टोपी का आस पास हमारा भी आसपास है	रघुवंश मणि	३७३
४९-	राही मासूम रज़ा की तवील नज़्म १८५७	वकार नासिरी	३८०
५०-	राही का एक मज़मून और दो नज़्में	शम्सुल हक उस्मानी	३८९
५१-	राही की कविता : साझी संस्कृति की विरासत	कुँवरपाल सिंह	३९३
५२-	डॉ.राही मासूम रज़ा की शायरी	रामनिहाल गुंजन	४००
५३-	खुदा हाफिज कहने का मोड़	संकर्षण प्रजापति	४०८
५४-	परदे के पीछे की दुनियाँ	चन्द्रदेव यादव	४१८
५५-	राही दूर से सुनाई देने वाली आवाज	महताब हैदर नकवी	४३५
५६-	वे रसखान का क्या करेंगे	सदानन्द साही	४४२
५७-	राही मासूम रज़ा और भारतीयता	देवेन्द्र कुमार गुप्त	४४५
५८-	इमरजेन्सी की भयावहता और 'कटरा बी-आर्जू'	कुमार पंकज	४४८
५९-	आपात काल और राही मासूम रज़ा	सजय राय	४५२

पत्र–पत्रिकाओं से

६०-	आधा गाँव : प्रतिक्रियावादियों का शिकार	विदेह	४६०
६१-	हिन्दू-मुस्लिम समस्या : एक सही दृष्टिकोण	विवेकी राय	४६३
६२-	आधा गाँव : पूरी तसवीर	श्रीकान्त वर्मा	४६५
६३-	समय की सलवटें और आधा गाँव	भगवान सिंह	४६७
६४-	राही मासूम रज़ा के उपन्यास : नये संबन्धों की तलाश	मधुरेश	४७६
६५-	राईटर एण्ड द रिवेल	राही मासूम रज़ा	४८०
६६-	मीना कुमारी : हम उसके वापस आने का इन्तजार कर रहे हैं	राही मासूम रज़ा	४८४
६७-	वहीदा अर्थात् अकेली	राही मासूम रज़ा	४८६
६८-	ओका नाम मुनताज रहा	रघुवीर सहाय	४९०
६९-	हिन्दुस्तान की कहानी : शवयात्रा	विष्णुचन्द्र शर्मा	४९२
७०-	राही के कुछ महत्वपूर्ण पत्र	कुँवरपाल सिंह	४९६
७१-	डॉ. रज़ा रहीम रसखान की परम्परा	रामकृष्ण तैलंग	५१५
७२-	हिन्दू-मुस्लिम समस्या पर दो टूक बातें	मुचकुन्द शर्मा	५१७
७३-	रचनाकारों के सम्पर्क सूत्र		५१९

राही मासूम रज़ा
(१ अगस्त १९२७ - १५ मार्च १९९२)
(हाईस्कूल की सर्टिफिकेट के अनुसार १ सितम्बर १९२७)

उर्दू के सुप्रसिद्ध शायर और हिन्दी के महान उपन्यासकार राही मासूम रज़ा पूर्वी उत्तर-प्रदेश के गाजीपुर के गंगौली गाँव में एक सुसंस्कृत परिवार में पैदा हुए थे। १९४५ में उन्होंने प्रगतिशील लेखक संध की सदस्यता ग्रहण की और अंत तक प्रगतिशील जनवादी आन्दोलन से जुड़े रहे। उनके पूरे लेखन में आम हिन्दुस्तानी की पीड़ा, दुःख-दर्द, उसकी संघर्ष क्षमता की अभिव्यक्ति है। राही ने जनता को बांटने वाली शक्तियों, राजनीतिक दलों, व्यक्तियों, संस्थाओं का खुला विरोध किया है। संकीर्णताओं और अंधविश्वासों, धर्म और राजनीति का सत्ता प्राप्ति के लिए गठजोड़ आदि का विरोध राही के लेखन में प्रमुखता से हैं। हिन्दी में उनके आठ उपन्यास प्रकाशित हैं। राही के शोध प्रबन्ध का विषय था- "तिलस्में होशरुबा में भारतीय संस्कृति"। राही ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति का गहन अध्ययन किया। उन्होंने तथ्यों के आधार पर यह प्रमाणित किया कि हिन्दुस्तान की संस्कृति इकहरी नहीं है। वह अनेक छोटी-बड़ी नदियों का संगम है। हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी बिशेषता है विचार और मत की भिन्नता होते हुए भी एक दूसरे के प्रति सम्मान और सहयोग का व्यवहार करना है। भारतीयता का अर्थ मनुष्यता है संकीर्णता नहीं। हमने सर्वप्रथम उद्घोष किया कि पूरा विश्व हमारा परिवार है, न कोई छोटा है न कोई बड़ा, सब बराबर हैं। भारतीय संस्कृति का संकीर्ण अर्थ करने वालों पर राही ने अपने पूरे लेखन में तीखे व्यंग्य किये हैं। हमारी संस्कृति यह बताती है कि मनुष्य से बड़ा कोई धर्म नहीं है। जो लोग इसके विपरीत आचरण करते हैं, वे भारतीय संस्कृति का अपमान करते हैं।

राही ६ वर्ष तक अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग में प्राध्यापक रहे। वे विश्वविद्यालय की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के केन्द्र विन्दु थे। राही के चरित्र में हिम्मत, दिलेरी, आत्मविश्वास और स्वाभिमान का गहन पुट था। इन जीवन मूल्यों को उन्होंने

किसी कीमत पर नहीं छोड़ा। उन्होंने अलीगढ़ छोड़ा, परेशानियां उठाई, न चाहते हुए भी १९६७ में बम्बई जाना पड़ा, वहीं उनकी १५ मार्च १९९२ ई. में मृत्यु हुई। राही ने तीन सौ के लगभग फिल्मों की पटकथा, संवाद और दूरदर्शन के लिए अनेक धारावाहिक लिखे। 'महाभारत' के संवाद लेखन से वे दूसरे वेद व्यास बन गये। उन्होंने 'महाभारत' के माध्यम से देश की सांस्कृतिक विरासत को आधुनिक संदर्भों के साथ घर-घर पहुँचा दिया।

उन्होंने विधिवत शायरी १९४५ में शुरू की और १९६६ तक उनके सात काव्य संग्रह उर्दू में प्रकाशित हो चुके थे जिनमें से प्रमुख हैं- 'नया साल', 'मौजे गुलः मौजे सबा', 'रक्से मय', 'अजनबी शहर अजनबी रास्ते'। उनका एक महाकाव्य 'अठारह सौ सत्तावन' हिन्दी-उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित है। उन्होंने परमवीर चक्र विजेता अब्दुल हमीद की जीवनी 'छोटे आदमी की बड़ी कहानी' (१९६६) भी लिखी। गरीबे शहर (१९९३) उनका अंतिम उर्दू काव्य संग्रह है।

सन् १९६६ में राही मासूम रज़ा का उपन्यास 'आधा गाँव' हिन्दी में प्रकाशित हुआ। उपन्यास के प्रकाशित होते ही राही हिन्दी जगत में चर्चित और प्रतिष्ठित हो गये। १९७२ में 'आधा गॉव' जोधपुर विश्वविद्यालय के एम. ए. के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया। १९९५ में पेन्युगन ने इसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया! १९९९ में हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिका 'वर्तमान साहित्य' ने अपने पाठकों से २०वीं सदी के १० सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों की सूची बनवाई तो आधा गॉव सातवें स्थान पर रहा। पाठकों और आलोचकों ने इस उपन्यास में उस नये संसार का कलात्मक परिचय प्राप्त किया, जिसके विषय में वे बहुत कम जानते थे। 'आधा गाँव' की कहानी १९४० से १९५७ तक घटी राष्ट्रीय घटनाओं, जमींदारी व्यवस्था, उसकी कुरूपता, गॉव का सामूहिक जीवन एवं उसके अन्तर्विरोध, धर्म की सामाजिक भूमिका आदि का विस्तार से चित्रण है। धर्म जब व्यक्ति और समाज त्यागकर राजनीति का दामन थाम लेता है तो उसकी मानवीय भूमिका समाप्त हो जाती है। तब वहाँ नफरत की फसल उगती है। साम्प्रदायिकता और कठमुल्लपन इसका दूसरा नाम है। १९४७ में देश का विभाजन ही नहीं हुआ, सदियों पुराने सामाजिक संबधों में भी खटास आई, परिवार भी टूट गये और साझी संस्कृति भी इस बंटवारे का शिकार हुई। राही चेतावनी देते हैं कि यदि धर्म का सत्ता प्राप्ति के लिये इस्तेमाल नहीं रोका गया तो इससे देश को दुबारा बहुत गंभीर परिणाम झेलने पड़ेंगे। 'आधा गाँव' की भाषा भोजपुरी उर्दू है, उपन्यास की तकनीकी नई है, कहानी कहने का अंदाज निराला है। 'आधा गाँव' तेजी से बदलते हुए समय की कहानी है, जमींदारी ब्यवस्था टूटने के वाद उत्तर भारत के मुसलमानों की स्थिति और भयावह हो गई। मुल्क के बंटवारे से उनके कंधे टूटे थे। जमींदारी उन्मूलन ने तो उनकी कमर ही तोड़ दी। जमींदारी ब्यवस्था की ऐतिहासिक भूमिका अव समाप्त हो गई थी। इसका नष्ट होना साधारणजन, छोटे किसानों के लिए हितकारी ही रहा।

'टोपी शुक्ला' (१९६८) में राही ने मध्य वर्ग के संकट, बढ़ते हुए जातीय संगठन और धार्मिक गठजोड़ों का विस्तार से चित्रण किया है। हमारे आज के मध्य वर्ग की यह त्रासदी है कि सही विचारों और परिवर्तन के लिए संघर्ष नहीं करता। बिना सामूहिक सोच विकसित किए साम्प्रदायिकता और जातिवाद से छुटकारा नहीं मिल सकता। यदि इन समस्याओं को हल नहीं किया गया तो भारत की एकता और अखण्डता के सामने संकट उत्पन्न हो जाएगा। हमारा देश अनेकताओं में एकता वाला देश है। उसकी सामाजिक संस्कृति के विना देश की रक्षा नहीं हो सकती। हमारी राजनीति राष्ट्रहित पर निर्भर नहीं है, सत्ताहित उसके यहाँ प्रमुख है। भ्रष्टाचार दीमक की तरह है। राही को हिन्दुस्तान के साधारण लोगों पर बहुत भरोसा है कि वे समय रहते उठेंगे और देश को सही रास्ते पर ले जायेंगे।

'हिम्मत जौनपुरी' (१९६९) में राही ने हिन्दुस्तान की जाति प्रथा का बहुत सूक्ष्मता से चित्रण किया है। हिन्दुस्तान में धर्म परिवर्तित किया जा रहा है लेकिन जातीयता अपरिवर्तनीय है। इस्लाम धर्म जो सिद्धान्ततः किसी तरह की ऊंच-नींच में भरोसा नहीं करता, वहाँ भी व्यवहार में ऊंच-नींच और जाति व्यवस्था है। शेख सैयद और पठान अपने को श्रेष्ठ मानते हैं और जुलाहे, कसाई और कौंजड़े आदि पिछड़ी जातियों को निम्न दृष्टि से देखते हैं। मुसलमानों की ऊंची जातियों में आज भी हड्डी से बहुत प्यार है। मुसलमानों में आज भी सामाजिक असमानता है।

'ओस की बूंद' (१९७०) इस लघु उपन्यास में राही हिन्दू, मुसलमानों के ऐतिहासिक सामाजिक रिश्तों पर प्रकाश डालते हैं। साम्प्रदायिकता कैसे हमारे रिश्तों में जहर घोल रही है। साम्प्रदायिकता हमारी राजनीति के गर्भ से पैदा साँप की तरह सबको डंस रही है। जनता इसी राजनीति का मोहरा है जिसे राजनीतिज्ञ अपने स्वार्थो के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। यह उपन्यास इंसानियत की तलाश में हर गाँव और शहर में जाता है और आपस में सौहार्द और समझदारी स्थापित करने की कोशिश करता है।

दिल एक सादा कागज (१९७३) राही का एक बड़ा और महत्वपूर्ण उपन्यास है। गाजीपुर से कहानी आरम्भ होती है और अलीगढ़, नारायण गंज, जवाहर नगर होती हुई बम्बई में ठहर जाती है। इस उपन्यास में कई कहानियाँ हैं। जमींदारों-अंग्रजों के सम्बन्ध, कांग्रेस-मुस्लिम लीग की राजनीति, देश विभाजन, हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के बीच हुए युद्ध और बंगला देश का बनना प्रमुख हैं। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी नायक रफ्फन को हमेशा शान्ति प्रदान करती है। राही हिन्दुस्तान में नये वर्ग का दबदबा विस्तार से चित्रित करते हैं जिसे नवधनाढ्य वर्ग या काले धन की संस्कृति के नाम से पुकारते हैं। ये वर्ग पैसा राजनीति में लगा रहा है। राही ने व्यंग्यात्मक स्वर में कहा है 'राजनीति में स्मगलिंग से भी अधिक लाभ है।' जो लोग पैसे और सत्ता के पीछे दीवाने हैं, जीवन में कितने अकेले हैं, इस उपन्यास का यह महत्वपूर्ण संदेश है। सीन-७५ (१९७७) में राही ने बम्बई की जिन्दगी को विभिन्न कोणों